सम्पादकीय

मानव सभ्यता के विकास में विज्ञान की बड़ी भूमिका रही है। प्रकृति में चहुँओर जो भी घटनाएं घटित होती हैं, उन सबके पीछे कोई न् कोई वैज्ञानिक कारण निहित होता है। मनुष्य, जीव जंतु, वनस्पतियों और अनेकानेक प्राकृतिक संसाधनों आदि के अस्तित्व को समझने में विज्ञान ही हमारी मदद करता है। मानव ज्ञान के आरंभिक युग में तार्किक ज्ञान और साथ ही साथ दर्शन को एकल रूप में 'विज्ञान' ही जाना जाता था। मगर समय के साथ आगे चलकर विज्ञान अनेक शाखाओं उपशाखाओं में बंट गया और इस तरह ज्ञान विज्ञान के विविध प्रामाणिक स्वरूप आज हमारे सामने मौजूद हैं। आज विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने हमारे जीवन को सुखद और सुदीर्घ बनाया है।

रसायन विज्ञान का महत्व हमारे जीवन में कहीं अधिक है इसलिए इसे मूल विज्ञान कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होनी चाहिए। संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2011 को अंतर्राष्ट्रीय रसायन विज्ञान वर्ष के तौर पर घोषित किया था और इस आयोजन का प्रमुख उद्देश्य रसायन विज्ञान के प्रति विद्यार्थियों और जन सामान्य में दिलचस्पी जगाना रहा है। हम सबको यह समझना जरुरी है कि मानव जाति की आवश्यकताओं को पूरा करने में रसायन विज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विश्व स्तर पर अनेक चुनौतियों का सामना करने के लिए रसायन विज्ञान की भूमिका को प्रोत्साहन दिया जाना भी अपेक्षित है।

'विज्ञान प्रकाश' के विज्ञान लोकप्रियकरण के उद्देश्य की परंपरा के निर्वहन की इस कड़ी का विषय भी अंतर्राष्ट्रीय रसायन विज्ञान वर्ष 2011 के महत्व को उजागर करना है और साथ ही साथ ग्लोबल परिप्रेक्ष्य में भारतीय रसायन विज्ञान और इसकी संभावनाओं पर चर्चा करना है। हमारे जीवन में रसायन विज्ञान, हमारा भविष्य, हरित रसायन, स्टेम सेल विज्ञान, दैनिक जीवन और कृषि में रसायन की भूमिका तथा महान रसायनज्ञों के जीवन से जुड़े कुछ प्रेरक प्रसंग जैसे अहम् विषय इस विशेषांक में सम्मिलित किए गए हैं। पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित सामग्री पर आपकी बेबाक राय का हमें बेसब्री से इन्तजार रहेगा। साथ ही अपेक्षा रहेगी आपके विज्ञान लेखन योगदान की।

जय हिंद ! जय विज्ञान !

प्रो. राम चौधरी
संपादक